Yarn Lying with Customs

*355. **SHRI VASANT SATHE:** Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether attention of Government has been drawn to the news report appearing in a local daily dated the 16th February, 1975 under the caption "Yarn worth Rs. 90 crore lying with customs";

(b) if so, what is the reaction of Government to the various observations made therein; and

(c) action taken in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE). (a) Yes, Sir.

(b) and (c) The correct position, however, is that 1259 cases of polyester filament yarn valued at Rs. 5 lakhs c.i.f. have been detained by the Customs authorities at Bombay on grounds of suspected trafficking in licences and undervaluation of the goods. All these consignments are under adjudication

In addition, 802 cases of synthetic yarns worth about Rs. 60 lakhs at market value and 6 cases of 3738 cartons of declared c.i.f. value of about Rs 11.10 lakhs, have been detained. Investigations in these cases have resulted in the seizure of a large quantity of synthetic yarns of market value about Rs 70 lakhs, suspected to have been smuggled in the past and in this connection 5 persons have been arrested so far Further investigations are in progress

Besides the synthetic yarns, Polyester Chips weighing about 267 metric tonnes of c.i.f. value Rs 30 lakhs approximately are lying uncleared at Bombay for the last about six months, pending examination whether the imports are in accordance with the licence conditions. Instructions have since been issued to the concerned authorities to finalise these cases on a priority basis.

पटसन के उत्पादन में कमी

*356. **श्री विभूति मिश्र :** क्या **वाणिज्य** मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या वर्ष 1974–75 में पटसन का उत्पादन 68 लाख गाठें से घटकर 48 लाख गाठें रह गया है ;

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण है ;

(ग) क्या पटसन के मूल्यों में गिरावट आने के कारण किसानों ने पटसन का उत्पादन करना बन्द कर दिया है , और

(घ) क्या सरकार जूट की खेती को जूट की कीमत गिरा कर तरजीह नहीं देना चाहती है ?

वाणिज्य मंत्री (प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय) : (क) वर्तमान अनुमानों के अनुसार 1974–75 मौसम के दौरान भारत में मैस्टा सहित पटसन का उत्पादन लगभग 50 लाख गाठें है जबकि 1973–74 मौसम में ये 76.37 लाख गाठें था ।

(ख) इस वर्ष फसल में कमी के यह कारण हो सकते है बआई के समय तथा उसके पश्चात् प्रतिकूल मौसम पटसन की खडी फसल को बाढों में हुई हानि तथा पटसन की खेती वाली कुछ भूमि पर अन्य फसलों का बोया जाना ।

(ग) अन्य प्रतियोगी फसलों की तुलनात्मक लाभप्रदता में शायद कुछ किस्सान कुछ क्षेत्रों में पटसन के स्थान पर अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रद अन्य फसलें उपजाने के लिये प्रेरित हुये है ।

(घ) जी नहीं । इसके विपरीत सरकार, कृषि मूल्य आयोग की सिफारिशों के आधार पर प्रत्येक मौसम के लिये कानूनी न्यूनतम कीमत निर्धारित किया करती है ।